{ खुद के लिए जीने वाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता पर जब आप दूसरों के लिए जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिए जीते हैं - परमहंस योगानंद }

सम्पादकीय

खतरनाक रूप लेता रूस-यूक्रेन का युद्ध

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद जब यह माना जा रहा था कि रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध समाप्त हो सकता है, तब वह खतरनाक मोड़ लेता दिख रहा है। इसका कारण यह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने यूक्रेन को ऐसे हथियारों से लैस करने का फैसला किया, जिससे वह रूस का मुकाबला करने में सक्षम हो सके। इस क्रम में उन्होंने यूक्रेन को रूस के खिलाफ लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलों के इस्तेमाल की अनुमति भी दे दी। यह अनुमति मिलते ही यूक्रेन ने रूस के खिलाफ ऐसी मिसाइल का इस्तेमाल करने में देर नहीं की। उसने रूस के खिलाफ ब्रिटेन से भी मिलीं मिसाइलों का भी इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इसके जवाब में रूस ने भी अपने तेवर दिखाते हुए पहली बार अंतर महाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल से यूक्रेन को निशाना बनाया। यह मिसाइल परमाणु हथियार ले जाने में भी सक्षम है।

रूसी राष्ट्रपति पुतिन पहले दिन से चेता रहे हैं कि यदि अमेरिका और यूरोप यूक्रेन के बचाव में आगे आते हैं तो वह इसे युद्ध में उनका सीधा दखल मानेंगे। अब रूस ने यूक्रेन के साथ अमेरिका और यूरोपीय देशों को धमकाने के लिए परमाणु हथियार इस्तेमाल करने के नियमों में बदलाव करने के साथ यह भी कहा है कि वह पोलैंड स्थित अमेरिकी एयरबेस को निशाना बनाएगा। पता नहीं, आगे क्या होगा, लेकिन यह ठीक नहीं कि जिस युद्ध के समाप्त होने की आशा जगी थी, उसके और भड़कने की आशंका पैदा हो गई है। इसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा जा रहा है कि वह अपना पद छोड़ने के पहले हालात बिगाड़ने के साथ विश्व को तीसरे युद्ध की ओर धकेल रहे हैं। जो बाइडन के फैसले की आलोचना अमेरिका में भी हो रही है, लेकिन यह भी ध्यान रहे कि उन्होंने यूक्रेन को घातक हथियार देने का निर्णय उन खबरों के सामने आने के बाद किया कि रूस की मदद के लिए उत्तरी कोरिया की सेनाएं मोर्चे पर आ डटी हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति अपने फैसले को उचित ठहरा सकते हैं, लेकिन इससे भी इन्कार नहीं कि उन्होंने रूस और यूक्रेन के बीच छिड़े 33 माह पुराने युद्ध को समाप्त करने की कोई ईमानदार कोशिश नहीं की। अमेरिका की तरह यूरोपीय देशों ने भी उन कारणों का निवारण करने की जहमत नहीं उठाई, जिनके चलते रूस की सुरक्षा चिंताएं बढ़ गई थीं और जिन्हें दूर करने के बहाने उसने यूक्रेन को निशाना बनाया। वैसे यह समझना भी कठिन है कि रूस यूक्रेन की ज्यादा से ज्यादा जमीन पर कब्जा कर क्या हासिल कर लेगा? अब जब रूस-यूक्रेन युद्ध भड़कने की आशंका बढ़ गई है और डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति पद पर आसीन होने में देर है, तब भारतीय प्रधानमंत्री को बीच-बचाव के लिए आगे आना चाहिए। वह इसमें सक्षम हो सकते हैं, क्योंकि अंतत: कोई न कोई समझौता होगा ही।

वि शे ष

बाजार की दशा एवं दिशा समझें, एक राजस्व स्रोत पर ना रहें निर्भर

निवेशकों को समझना होगा कि निवेश परिसंपत्तियों में प्रायः चक्रीय रुझान देखने को मिलता है। इसमें शिखर से लेकर तलहटी की स्थिति अपरिहार्य है। बाजार को प्रभावित करने वाले बेशुमार कारक हैं और वास्तव में उन पर किसी का पूर्ण नियंत्रण नहीं हो सकता। उदाहरणस्वरूप राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकाल के दौरान अमेरिका में कारपोरेट टैक्स में कमी के आसार हैं जिससे कंपनियों के लाभ और विवेकाधीन खर्चों में बढ़ोतरी होगी।

■ तरुण गुप्त

कहावतें समय, काल और परिस्थितियों की हर कसौटी पर अपनी सार्थकता सिद्ध करती आई हैं। एक पुरानी कहावत है कि अपने सभी फल एक ही टोकरी में न रखें। यह कहावत जीवन की अंतर्निहित सीख के साथ ही वित्तीय अनुशासन एवं नियोजन के मोर्चे पर भी उतनी ही सटीक बैठती है। एक सदाबहार वित्तीय सलाह यह दी जाती है कि कभी भी केवल एक राजस्व स्रोत पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए। कोई व्यक्ति भले ही किसी पेशे में हो, उसके लिए आय के विभिन्न स्रोत विकसित करना सदैव लाभदायक होता है।

उदारवाद से पूर्व के भारतीय मध्यवर्ग की बात करें तो उसकी बचत मुख्य रूप से बैंक डिपाजिट, बीमा, रियल एस्टेट और सोने में निवेश से होती रही। ब्याज और किराये से होने वाली कमाई ने एक सामान्य परिवार के राजस्व की धारा को विविधता प्रदान की। समय के साथ निवेश के अपेक्षाकृत जटिल, किंतु परिष्कृत माध्यमों का भी उभार हुआ। सीधे इक्विटी या म्यूचुअल फंडों के माध्यम से पूंजी बाजार में दांव लगा रहे लोगों ने उल्लेखनीय लाभ का मंत्र तलाशा। यदि शेयर निवेशकों की पहली पीढ़ी के लिए शेयरों पर डिविडेंड वस्तुत: कर मुक्त आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बना तो अनुवर्ती पीढ़ियों को मूल पूंजी में अत्यधिक वृद्धि के पहलू ने लुभाया। शेयर बाजार में निवेश ने अन्य निवेश माध्यमों में बढ़ोतरी को पीछे छोड़ दिया। उदारवाद के उपरांत भारत निवेश सलाहकारों के एक नए वर्ग के उभार का साक्षी बना। ये सलाहकार अपने ग्राहकों को असंख्य निवेश विकल्पों के चयन में सहायक बनने लगे।

कोरोना महामारी के बाद पूंजी बाजार निवेशकों की संख्या में व्यापक प्रसार हुआ है। इक्विटी निवेश भले ही एक पुरानी अवधारणा हो, लेकिन बीते पांच वर्षों के दौरान इसमें अभूतपूर्व तेजी दिखी है। निवेशकों की संख्या से लेकर निवेश की मात्रा कई गुना बढ़ी है। इस तेजी का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि बीते चार वर्षों के दौरान डीमैट खातों की संख्या चार करोड़ से बढ़कर 17 करोड़ हो गई है। इक्विटी फंडों में एसआइपी (सिस्टेमिक इन्वेस्टमेंट प्लान) निवेश भी रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है।

सितंबर के अंत तक भारतीय शेयर बाजार अकल्पनीय तेजी पर सवार रहा और ऐतिहासिक ऊंचाई पर पहुंचा, किंतु पिछले दो महीने से बाजार में 10 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है। चूंकि निवेशकों की एक बड़ी संख्या ने महामारी के बाद पहली बार बाजार में कदम रखा तो व्यापक संपत्ति अवमूल्यन का यह उनका पहला अनुभव है, जहां उनके निवेश में इतना ह्रास हुआ हो। ऐसे में, कुछ घबराहट और यहां तक कि कोहराम की स्थिति स्वाभाविक ही है। स्थायी एवं स्थिर निवेश परिदृश्य के लिए इस प्रकार का माहौल प्रतिकूल होता है। इस कोलाहल को शांत करने के लिए कुछ आधारभूत पहलुओं पर दृष्टि डालना उपयोगी हो सकता है।

विगत वर्षों में ऐसा क्या कारण रहा, जिसके चलते पूंजी बाजार में इतना भारी निवेश हुआ? पूंजीगत लाभ के बहुत ही स्वाभाविक कारण से इतर एक महत्वपूर्ण, किंतु कम चर्चित कारण भारत में कराधान नीति से जुड़ा है। फिकस्ड इनकम (नियत आय) से जुड़ी सभी योजनाओं पर वर्तमान में करों की सर्वाधिक दरें लागू होती हैं। चाहे बैंक डिपाजिट हो, डेब्ट म्यूचुअल फंड या मार्केट लिंक्ड डीबेंचर, सभी पर टैक्स आपकी आय के अनुसार लगाया जाता है, जो अधिकतम 40 प्रतिशत से अधिक तक हो सकता है। कुछ समय पहले एक भिन्न कराधान नीति अस्तित्व में थी, जहां इनमें से कुछ पर इंडेक्सेशन के साथ लांग टर्म कैपिटल गेन टैक्स लगाया जाता था। उससे टैक्स का बोझ कुछ घट जाता था। वर्तमान कर प्रणाली में फिक्स्ड इनकम निवेशों पर टैक्स देने के बाद आय काफी कम हो गई है, जो महंगाई की दर के अनुरूप भी नहीं रह जाती है। आवश्यक नहीं कि इसे टैक्स नीति की आलोचना के रूप में ही लिया जाए। इस संदर्भ में यह तर्क दिया जाता है कि एक प्रकृति के सभी निवेशों पर समान टैक्स नीति होनी चाहिए। निवेशक अपना निर्णय संबंधित योजना की गुणवत्ता के आधार पर लें, न कि उससे मिलने वाले अनुचित एवं भिन्नतापूर्ण टैक्स लाभ को ध्यान में रखकर। हालांकि इसकी स्वाभाविक प्रतिगामी परिणति यही हुई कि निवेशक अपर्याप्त जानकारियों के बावजूद इक्विटी की ओर जाने पर विवश हैं।

निवेशकों को समझना होगा कि निवेश परिसंपत्तियों में प्राय: चक्रीय रुझान देखने को मिलता है। इसमें शिखर से लेकर तलहटी की स्थिति अपरिहार्य है। बाजार को प्रभावित करने वाले बेशुमार कारक हैं और वास्तव में उन पर किसी का पूर्ण नियंत्रण नहीं हो सकता। उदाहरणस्वरूप राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकाल के दौरान अमेरिका में कारपोरेट टैक्स में कमी के आसार हैं, जिससे कंपनियों के लाभ और विवेकाधीन खर्चों में बढ़ोतरी होगी। इसका लाभ अमेरिका में सक्रिय भारतीय कंपनियों को भी मिलना चाहिए। दूसरी ओर, टैरिफ दरें बढ़ने का भी डर है। ऐसी स्थिति में अमेरिका को किए जाने वाले निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और उससे हम भी अछूते नहीं रह पाएंगे।

संस्थागत निवेशकों का उभरते बाजारों से सुरक्षित ठिकानों की ओर पूंजी पलायन, मुद्रा अवमूल्यन, सैन्य संघर्ष एवं टकराव और राजनीतिक अस्थिरता भी बाजार में गिरावट का कारण बनते हैं। कई और भी गूढ़ पहलू होते हैं। इन पहलुओं की सही समझ और संयत आचरण ही आपको बाजार के झंझावातों से बचाएगा।

शेयर निवेश कोई अटकलबाजी का खेल नहीं है। निवेश के इच्छुक व्यक्ति को संबंधित क्षेत्र या कंपनी के व्यवसाय, क्षमताओं और भविष्य की संभावनाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। दीर्घ अवधि में शेयर वैल्यू को प्रति शेयर आय से अलग या असंगत नहीं किया जा सकता। अतार्किक प्राइस अर्निंग्स मल्टीपल टिकाऊ नहीं है। वस्तुत:, सामान्य स्वीकृत सिद्धांत यही कहता है कि इक्विटी निवेशक को दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ कम से कम तीन से पांच वर्षों के लिए निवेश करना चाहिए। ऐसा नहीं कि अन्य लुभावने विकल्प उपलब्ध नहीं, किंतु तरलता एवं वृद्धि का उत्कृष्ट समन्वय इक्विटी निवेश को एक अलग ही आकर्षण प्रदान करता है। उचित होगा यदि निवेशक वर्ग के लिए जागरूकता कार्यक्रम और ढांचागत शिक्षा की व्यवस्था संभव हो पाए।

क्या बाजार में और गिरावट आएगी? बाजारों की अनिश्चितता ही उनका सर्वाधिक सुनिश्चित पहलू होती है। स्मरण रखिए कि ऊंचे प्रतिफल के साथ अमूमन कुछ जोखिम भी जुड़ा होता है। जोखिम को समाप्त करना तो असंभव है, लेकिन उसे कम करने का प्रयास अवश्य किया जा सकता है। सोचा-समझा जोखिम और सही जानकारियों के आधार पर लिए गए निर्णय ही आगे बढ़ने की इकलौती राह है।

प्रदेश

'चिकित्सा संस्थान कुशल वित्तीय प्रबंधन से दें कार्यों को गति'

मेडिकल कॉलेजों के प्रधानाचार्य एवं अस्पताल अधीक्षकों ने लिया वित्तीय प्रशिक्षण

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

राजकीय कार्यों का कुशलतापूर्वक सम्पादन करने के उद्देश्य से चिकित्सा शिक्षा विभाग की ओर से प्रदेश के सभी राजकीय मेडिकल कॉलेजों एवं संबद्ध अस्पतालों के प्रधानाचार्यों एवं अधीक्षकों के लिए एक दिवसीय वित्तीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इससे चिकित्सा संस्थानों में कुशल वित्तीय प्रबंधन हो सकेगा और बजट के उपयोग एवं अन्य वित्तीय प्रक्रियाओं को गति मिल सकेगी।

कार्यशाला में चिकित्सा शिक्षा विभाग के शासन सचिव अम्बरीष कुमार ने कहा कि प्रदेश में मेडिकल कॉलेजों एवं उससे संबद्ध अस्पतालों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को सुगम एवं सुलभ बनाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस दिशा में जरूरी है सरकार की ओर से समय-समय पर की गई घोषणाएं एवं योजनाओं को क्रियान्वयन शीघ्रता के साथ

एवं पूरी कुशलता के साथ हो। उन्होंने कहा कि कई बार यह देखा जाता है कि चिकित्सा संस्थानों में अधिकारियों एवं कार्मिकों को वित्तीय प्रक्रियाओं की समुचित जानकारी नहीं होने के अभाव में कार्यालय, मेंटीनेंस, रख-रखाव एवं विभिन्न उपकरणों या अन्य खरीद के लिए धनराशि की मांग करने सहित अन्य कार्यों में विलंब होता है या वित्तीय अनुशासन की पालना नहीं हो पाती है। कई जरूरी कार्यों के लिए धन का अभाव सामने आता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए ओपीडी और आईपीडी आधारित बजट मांग का फार्मूला तैयार किया गया है।

शासन सचिव ने कहा कि वित्तीय अनुशासन की पालना करते हुए चिकित्सा उपकरणों की खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता रखी जाए और उपकरणों को चिकित्सकों की सलाह के आधार पर ही खरीदा जाएगा। उन्होंने बजट की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए फॉर्मेट तैयार करने और इसे लागू करने के निर्देश दिए। शासन सचिव ने सुझाव दिया कि सभी मेडिकल कॉलेज अपनी प्रगति को साझा करने के लिए मासिक न्यूज़लेटर प्रकाशित करें, इसमें मरीजों को दी गई चिकित्सा सेवाओं, ऑपरेशंस, नवाचारों और आगामी योजनाओं का उल्लेख किया जा सकता है।

बाइक सवार युवक ने की युवती से छेड़छाड़

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। बिंदायका थाना इलाके में बाइक सवार युवक द्वारा एक युवती से छेड़छाड़ करने का मामला सामने आया है। मामले की जांच एसीपी बगरू हेमेन्द्र शर्मा कर रहे हैं। पुलिस ने बतायाद कि बिंदायका निवासी 21 वर्षीय एक युवती ने मामला दर्ज करवाया कि पिछले काफी समय से आरोपी रास्ते से आते-जाते समय बाइक से उसका पीछा करता है। बीच रास्ते में पकड़कर उसके साथ छेड़छाड़ किया करता है। विरोध करने पर किडनैप कर ले जाने की धमकी देता है। पुलिस में शिकायत करने पर शांतिभंग में अरेस्ट किया, लेकिन वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। उसके बाद भी लगातार आरोपी पीछा उसके साथ छेड़छाड़ करता है। 17 नवम्बर को घर आकर उठा ले जाने की धमकी देकर शोर मचाने लगा। लोगों के पकड़ने भागने पर अपना मोबाइल व बाइक छोड़कर भाग निकला। किडनैप कर अब जान से मारने की धमकी दे रहा है। थाने में पीड़िता ने आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई।

बदमाश झपट्टा मारकर छीन ले गया मोबाइल

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। चाकसू थाना इलाके में बाइक सवार बदमाश एक युवक के हाथ पर झपट्टा मारकर मोबाइल छीनकर ले गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। पुलिस के अनुसार रावत कॉलोनी निवासी निमित रावत ने मामला दर्ज करवाया कि वह किसी काम से कोटखावदा मोड़ पर गया था। मोड पर पीछे से एक बाइक सवार बदमाश आया और उसके हाथ पर झपट्टा मारकर मोबाइल छीनकर ले गया। इस अप्रत्याशित घटना में वह कुछ समझ पाता तब तक बदमाश तेज गति से बाइक चलाकर गलियों में ओझल हो गए। इस पर पीड़ित ने थाने पहुंचकर मामला दर्ज करवाया।

घर में घुसकर वसूली करने वाली गैंग के दो बदमाश गिरफ्तार

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। चौमूं थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए घर में घुसकर वसूली करने वाली गैंग का पर्दाफाश कर गैंग के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इसके अलावा एक बाल अपचारी को भी निरुद्ध किया है।

पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी किराए पर मकान लेने के बहाने घर में प्रवेश करते हैं और मारपीट कर बंधक बनाकर क्यूआर कोड के जरिए जबरन वसूली करते हैं। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि चौमूं थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए किराए पर मकान लेने के बहाने घर में घुस कर जबरन वसूली करने वाले हरियाणा के बदमाश प्रिंस निट्टू और आशुतोष को गिरफ्तार किया है और साथ ही एक बाल अपचारी को निरुद्ध किया है।

एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया को दूसरे साल भी 'बेस्ट प्लेस टु वर्क' का दर्जा

जयपुर। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एलजीईआईएल) को एक बार फिर प्रतिष्ठित 'ग्रेट प्लेस टु वर्क' सर्टिफिकेशन से सम्मानित किया गया है। यह लगातार दूसरा साल है जब एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया ने यह प्रतिष्ठित सम्मान हासिल हुआ है। ग्रेट प्लेस टु वर्क वर्कप्लेस कल्चर से जुड़ी एक ग्लोबल अथॉरिटी है। इस संस्था का मिशन हर जगह को सभी के लिए काम करने की एक सबसे बेहतरीन जगह बनाने में मदद करना है। इसकी ओर से कंपनियों को दिया गया यह प्रतिष्ठित सम्मान नियोक्ता ब्रांडों को इसलिए प्रोत्साहित करता है कि वे सही लोगों को आकर्षित करने में रुचि दिखाएं।

एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया को लगातार दूसरी बार प्रदान किया गया सर्टिफिकेशन यह बताता है कि किस प्रकार कंपनी काम काज का एक बेहतर माहौल तैयार करने के लिए प्रयास कर रही है। पिछले साल की सफलता को आगे बढ़ाते हुए, एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया ने कर्मचारियों की संतुष्टि प्रदान करने पर पूरा ध्यान दिया। कंपनी ने संगठन में गर्व करने, नेतृत्व पर विश्वास करने और काम करने का एक सहयोगी एवं सहायक माहौल तैयार करने जैसे कुछ ऐसे मूल्यों को प्राथमिकता दी है, जो इसे काम करने की एक सबसे बेहतरीन जगह बनाते हैं।

इस उपलब्धि के बारे में बात करते हुए एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया के प्रबंध निदेशक होंग जू जियोन ने कहा कि हम लगातार दूसरे साल ग्रेट प्लेस टू वर्क सर्टिफिकेशन प्राप्त करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया में, हमारा मानना है कि हमारे कर्मचारी हमारे लिए सबसे मूल्यवान हैं। हमारी यही सोच बताती है कि हम कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग, इनोवेशन और आपसी सम्मान प्रदान करने वाली संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए कितने प्रतिबद्ध हैं। यह उपलब्धि हमें काम करने की ऐसी जगह बनाने के लिए प्रेरित करती है जहाँ हर कोई सफलता हासिल कर सकता है।

दोहरीकरण कार्य के कारण रेल यातायात प्रभावित, कुछ ट्रेनें रहेगी आंशिक रद्द

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

उत्तर रेलवे के अम्बाला मण्डल पर राजपुरा-बठिण्डा रेलखण्ड के मध्य पटियाला स्टेशन पर दोहरीकरण कार्य हेतु नॉन इंटलॉकिंग ब्लॉक लिया जा रहा है। इस कार्य हेतु रेल यातायात प्रभावित रहेगा। जनसम्पर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार

गाड़ी संख्या 14735, श्रीगंगानगर-अम्बाला रेलसेवा जो 30.11.24 से 08.12.24 तक श्रीगंगानगर से प्रस्थान करेगी, वह रेलसेवा बठिंडा तक संचालित होगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 14736, अम्बाला-श्रीगंगानगर रेलसेवा 01.12.24 तक अम्बाला से प्रस्थान करेगी, वह रेलसेवा अम्बाला के स्थान पर बठिंडा स्टेशन से संचालित होगी, अर्थात यह दोनों रेलसेवा आंशिक रद्द रहेगी। उन्होंने बताया कि गाड़ी संख्या 14887, ऋषिकेश-बाड़मेर रेलसेवा 02.12.24 से 07.12.24 तक ऋषिकेश से प्रस्थान करने वाली रेलसेवा पटियाला स्टेशन के स्थान पर दौउ कलां स्टेशन पर ठहराव करेगी। गाड़ी संख्या 14888, बाडमेर-ऋषिकेश रेलसेवा 02.12.24 से 07.12.24 तक बाडमेर से प्रस्थान करने वाली रेलसेवा पटियाला स्टेशन के स्थान पर धबलान स्टेशन पर ठहराव करेगी।

गाड़ी संख्या 14525, अम्बाला-श्रीगंगानगर रेलसेवा 03.12.24 से 08.12.24 तक अम्बाला से प्रस्थान करने वाली रेलसेवा पटियाला स्टेशन के स्थान पर दौउ कलां स्टेशन पर ठहराव करेगी। गाड़ी संख्या 14526, श्रीगंगानगर-अम्बाला रेलसेवा 02.12.24 से 08.12.24 तक श्रीगंगानगर से प्रस्थान करने वाली रेलसेवा पटियाला स्टेशन के स्थान पर धबलान स्टेशन पर ठहराव करेगी। गाड़ी संख्या 14815, श्रीगंगानगर-ऋषिकेश रेलसेवा 03.12.24 से 08.12.24 तक श्रीगंगानगर से प्रस्थान करने वाली रेलसेवा पटियाला स्टेशन के स्थान पर धबलान स्टेशन पर ठहराव करेगी।